International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-08-2020; Accepted: 10-09-2020; Published: 26-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 44-45

वर्तमान समाज में प्रेमचंद की कहानियों की प्रासंगिकता

Savita Chandru Chawan
Department of Hindi, Parvatibai Chowgule College of Arts and Science, South Goa, India

प्रस्तावना

भारतेन्दु के पश्चात हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक एवं समाज सुधारक के रूप में मुंशी प्रेमचंद का नाम प्रथम आता है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज को बेनकाब किया है। जैसा की हम सब जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। यदि आज देश भर हर घर में चूल्हा जल रहा है तो वह केवल किसानों के बदौलत। किन्तु उसी अन्नपूर्णा (किसान) के आलय में अन्न की न्यूनता होती है, यह वास्तविकता है। प्रेमचंद ने अपनी कथा-सृष्टि की सार्थकता इसी में समझी कि वे अपने माध्यम से किसानों कि स्थिति को, उनके दुख, दुविधा, उनके कुचलते हुये आत्मसम्मान को जनता के सामने पेश कर सकें और उससे भी बड़ी बात, उन्हे यह बता सके कि किसान को जितनी ज़्यादा ज़रूरत पूरे भारत के साथ और सहानुभूति की है, उससे कहीं ज़्यादा ज़रूरत पूरे भारत को किसान की है, क्योंकि किसान ही बिना स्वार्थ के पूरे देश को अन्न प्रदान कर सकता है, उसका पेट भर सकता है। यही कारण है कि प्रेमचंद ने अपने साहित्य में ग्रामीण जीवन एवं कृषियों को अत्यधिक महत्व दिया है।

सरकार और जमींदारों की उपेक्षा के कारण किसानों की उन्नति दब गयी है। कड़ी मेहनत के बावजूद उसका उपज सस्ते दामों में बिका जाता है और मुनाफ़ा उधयोगपतियों को होता है। इसी कारण भारत में किसान आज भी ऋणग्रस्त हैं। मुंशी प्रेमचंद के रचनाकाल और वर्तमान समय के किसानों की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये तो एक बात स्पष्ट हो जाती है कि किसानों के लिए स्थितियाँ आज़ादी के बाद भी बहुत बेहतर नहीं हुई है। 'पुस की रात' कहानी को प्रकाशित हुये लगभग 98 वर्ष हो गए, आज भी हमें इस कहानी के हलकू की स्थिति प्रासंगिक लगती है। ऐसे तमाम हल्कू हमें देखने को मिल जाएंगे जो वसंत माह में अपने तन को ढकने योग्य भी नहीं है। प्रेमचंद जी का हल्कू रातभर खेत में पहरा देता है, ठंड बर्दाश्त न होने पर वह अपने कुत्ते जबरे को गले लगा लेता ताकि वह कुत्ते के शरीर की गर्मी को एहसास कर सके। इन सब चीजों में नाकामियाब होने पर जब वह बगल के बाग में पत्तों को जलाकर खुदकों ठंड से बचाने का प्रयत्न करता है तो पालक झपकते ही उसके खेत में नीलगाय आकार अनाज कुचल देती है। वर्तमान सामय यदि इस विषय पर चर्चा करें तो ऐसे तमाम हल्कू हमें मिल जाएंगे जो स्वयं को हानी पहुंचाकर अपने फसल की रक्षा करता है। हर ऋतु में उसे किसी न किसी बात की चिंता लगी रहती है। चाहे वह पुस का महिना हो या सावन का महिना। मुझे इस कहानी की मुन्नी का कथन बहुत मर्मस्पर्शी मालूम होता है और उससे अधिक हल्कू का। सुबह फसल को उद्ध्वस्त देख मुन्नी कहती है 'अब मजूरी कर मालगुज़ारी करने पड़ेगी।" और हल्कू उतार देता है " रात को यहाँ सोना तो न पड़ेगा।" इस कथन से स्पष्ट होता है की हल्कू जैसे अनेक किसानों का हौसला टूट चुका है और तो और उसका संघर्ष कम नहीं होता बल्कि बढ़ता चला जाता है।

इसी प्रकार हम यदि प्रेमचंद जी की दूसरी कहानी 'सवा सेर गेहु' पर नज़र दौड़ाएँ तो हमें बंधुआ मजदूर के रूप में किसान दिखाई देगा। शंकर की दुर्गति की कहानी सवा सेर गेहु से है जो एक साधु का पेट संतुष्ट करने के हेतु अपने गाँव के ब्राह्मण विप्र से लेता है और बदले में उसे उसका ऋण खुदकों ब्राह्मण के हवाले करके चुकाना पड़ता है। यही नहीं शंकर का बेटा आजीवन विप्र का नौकर बनकर रह जाता है। इस कहानी को पढ़ते समय मेरा मन रोने लगा और मेरे होंठ घृणा से हसने लगे। आज के समय में मैं देखती हूँ कि उत्तर भारत और ऐसे कई क्षेत्र जहां किसान को तो बंधुआ नहीं बनाया जाता किन्तु उसके घरके स्त्रियों पर अत्याचार किया जाता है, उसकी बेटियों के देह से खिलवाड़ किया जाता हिय। क्यों? ताकि उसका पिता, उसका पति वक्त पर ऋण नहीं चुका पाता इसलिए, वह ऋण जो कभी उसने लिया ही न हो। किसान के अशिक्षित होने का फायदा उच्च वर्ग के लोग लेते हैं और उनपर न न प्रकार के ऋण एवं नियम ढोया जाता है। आज भी हम शंकर एवं उसके बेटे जैसे अनेक कृषियों को देख सकेंगे जो इन पूँजीपतियों के गिरफ्त में है। भारत में हर वर्ष 3 लाख से भी ज़्यादा किसान आत्महत्या करते हैं ताकि वे बैंक एवं साहूकारों से लिया हुआ कर्ज़ वक्त पर जमा नहीं कर पाते। उनकी इस कठिनाइयों का कारण अनेक हैं। वर्षा का कम होना, भारी वर्षा के कारण फसल का बर्बाद होना, उपज को उधयोगपतियों द्वारा कम दाम मे लेना, खेती के साधनों का अभाव आदि। इस बात पर प्रेमचंद ने और भी विस्तार से चर्चा अपने उपन्यासों में किया है। जैसा की हम जानते हैं कि प्रेमचंद जी अपने रचनाकाल में दूरदृष्टा साबित हुये हैं। उन्होने किसान जीवन से पृथक सामाजिक शोषण पर भी अधिक कलाम चलाया है। प्रेमचंद ने आधुनिक साहित्य में मानव की मानवता का उद्घाटन किया है जो लगभग मर गया है। प्रेमचंद के मृत्यु के ठीक 83 वर्ष बाद भी उनकी कहानियाँ प्रासंगिक है। 21वी सदी के आज के दौर में प्रेमचंद का ज़िंदा रहना अत्यंत आवश्यक है। इनकी अनेक कहानियाँ यथार्थ की धरातल पर खड़े हैं। क्या आज की स्थिति में जहाँ पैसो का बोलबाला है वहाँ दो भाइयों में भाईचारा रह गया है ? जी नहीं, माँ-बाप की वसीयत के लिए भाइयों में इतना द्वेष और घृणा पनप रही है मानों जिस कोख से जनम लिया उसका तक लिहाज करना भूल गए हाओ। प्रेमचंद जी कि 'दो भाई' कहानी 21वी सदी में प्रासंगिक है। कहानी के केदार एवं माधव आज हमें प्रत्येक घर में देखने को मिल जाएंगे। चंद पैसो तथा ज़मीन ने भाइयों को बाँट दिया है। अपनापन, वात्सल्य भावना जो हमें पुरुषोत्तम राम और अनुज लक्ष्मण में नज़र आता था वह आज छिन्न-विछिन्न हो गया है। इसके चलते उस माँ का कलेजा फट कर रह जाता है जो 'दो भाई' कहानी की कलावती के समान अपने कोख को कोसती है, ऐसे कुपुत्रों को जनने पर। इसी प्रकार मुझे 'बेटों वाली विधवा' कहानी भी अत्यधिक मार्मिक लगती है। कहानी की फूलमाती अपने पति के गुजरने के बाद अकेली और असहाय हो जाति

है। तीन बेटों और बहुओं के होने के बावजूद फुलमती की अवस्था घर की नौकरानी से कम नहीं है। इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है की स्त्री का अस्तित्व उसके पति से जुड़ा होता है, मर्द के गुज़र जाने के बाद वह न तो समाज को भाती है और न ही अपने बच्चों को यदि वह वृदधा अवस्था में हो तो उसकी स्थिति और भी दयनीय हो जाति है। जो माँ-बाप आजीवन अपने बच्चों के भविष्य के लिए परिश्रम करते हैं, बच्चों के साकार भविष्य की कल्पना में वे अपना वर्तमान त्यागते हैं। उन्हीं बच्चों के लिए वृद्ध माता-पिता बोझ बन जाते हैं। आज के दौर में जहां संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में तब्दील होता चला जा रहा है, जहां पति, पत्नी और बच्चे मात्र के लिए स्थान है और घरके बुज़ुर्गों को या तो वृदधा आश्रामों में रखा जाता है या फिर उन्हें मृत्यु के हवाले छोड़ दिया जाता है।

बूढ़ी काकी कहानी की अवस्था भी कुछ इसी प्रकार है। बूढ़ी काकी अपने बच्चों के मृत्यु के बाद अपने भतीजे के भरोसे पर अपनी सारी जमा पूंजी उसके नाम कर देती है, इसी सोच से कि वह उसके बुढ़ापे का सहारा बनेगा लेकिन क्या ऐसा हो पाया? नहीं, सब कुछ होते हुये भी काकी एक नौकर के समान जीवन व्यापन कर रही है तब भी और आज भी। पैसा हो तो मनुष्य को समाज में सहारा जाता है वरना वह उपेक्षा का पात्र मात्र रेह जाता है। आज कि बूढ़ी काकी का परिवार रहते हुये भी दर-बदर भटकती नज़र आ रही है, कहीं भिख मांगते हुये या कहीं किसी के घरमें बरतन माँजते हुये। क्या हमारे माँ-बाप हमारे लिए बोझ हैं? हमारे कमाई का एक रोटी तक के हकदार वे नहीं हैं? मेरे प्रश्न केवल प्रश्न ही रेह जाएंगे, इनके उत्तर के लिए मैं प्रतीक्षा करूंगी।

प्रेमचंद की कहानियों को पढ़कर एक बात का बोध होता है कि उन्होने कहानी के मूल को पारियों की कहानियों से निकालकर यथार्थ की ज़मीन पर ला खड़ा कर दिया है और वही सही माने में हिन्दी आधुनिक साहित्य के जन्मदाता है। इनकी कहानियाँ आज भी इस प्रकार पढ़ी और सुनी जाती है मानो प्रेमचंद का पात्र वर्तमान में ज़िंदा हो और अपना कर्म कर रहा हो।

संदर्भ सूची

1. मानसरोवर की सम्पूर्ण २२१ कहानियाँ, मुंशी प्रेमचंद, मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली।
2. प्रेमचंद की प्रासंगिकता, अमृतराय, ई-पुस्तकालय।।